AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

xkj[kukFk dk Çpru e rU= vkj ;kx dk vkè;kfRed lUnHk

'kks/k lkj

ukFk lEçnk; d pkj fl) ;kxhÜoj e xkj[kukFk dh vkè;kfRed Çpru i)fr rkRdkyhu ck)k] 'kok] 'kkäk vkfn d fofHkUu lEnk;k d vfrfjä loFkk ,d uohu lkèkuk i)fr jgh gA ukFk ijiijk] fuxq.k ijEijk dk çfjr&çHkkfor dju okyh ,d vkè;kfRed Çpru i)fr FkhA budk v}r] 'kdjkpk; d v}r l foy{k.k Fkk] Hkxoku c) dh Çpru i)fr l vyx FkkA ;|fi egk;ku 'kk[kk d ck) lkèkdk u rU= vkj ;kx ij fu"Bkiod dk; fd;k rFkk Hkkjrh; rU= ,o ;kx l rknkRE; LFkkfir djr g, ,d nlj e lekfo"V gk x;A Hkkjrh; n'ku e ;kx vkj rU= ç.kkyh d ijLdrk vkfn;kxh Hkxoku f'ko eku tkr jg g vkj ukFkiFk bUgÈ vkfn;kxh dk viu l tkMdj n[kr gA ;s ck) èkel d fdlh Hkh çHkko l viu dk vçHkkfor ekur gA budh viuh fof'k"V lkèkuk i)fr] vkpkj ,o fu;e jg gA fl) gkr g, Hkh budh Çpru i)fr loFkk fof'k"V FkhA bUg fl)er] fl) ekx] ;kxekxÊ] voèkr lEçnk;] vkfn uke l Hkh tkuk tkrk gA

ORIGINAL ARTICLE

Author
M,- ver çtkifr
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
नन्द लाल सिंह महाविद्यालय
जयप्रकाश विश्वविद्यालय,
छपरा, बिहार, भारत

e[; 'kCn

f'ko] xkj[k fl)] ukFk lEçnk;] n'ku] èke] rU=A

भारतीय धर्म साधना के साहित्य में गोरख का नाम ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही प्रामाणिक माना जाता है। हिन्दी साहित्य की मध्यकालीन कविता के पूर्ववर्ती पृष्ठभूमि में कबीर से पूर्व जिस महान चेतना का उदय हुआ उस चेतना को हम गोरखनाथ या गोरक्षनाथ के नाम से जानते हैं। इनके उद्‌भव और कालक्रम के सम्बन्ध में यद्दपि थोड़ा मतभेद और विवाद हो सकता है, किन्तु ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर ये सरहपा और कबीर के बीच में जो कालखण्ड है उसी कालखण्ड की महान विभूति हैं। गोरक्षनाथ के आध्यात्मिक चिंतन के विवरण से पूर्व यहाँ यह निश्चित कर देना अनिवार्य है कि गोरख का और उनके सिद्धातों का अपने पूर्ववर्ती बौद्ध धर्म से किन्चित भी कहीं कोई सम्बन्ध प्रभाव या सारोकार नहीं है। इस सन्दर्भ में एक तथ्य और है कि जो विद्वान सिद्धों के चिंतन और उनकी परम्परा का बौद्ध धर्म से जोड़ते हैं, वे भी कहीं–न–कहीं सैद्धांतिक धरातल पर एक बहुत बड़े भ्रम के प्रतिबन्ध से पीड़ित हैं। नाथों का और सिद्धों का बौद्ध धर्म की किसी भी शाखा से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। यह दोनों विचारधाराएँ भारतीय दर्शन की आगम पद्धति की दो धाराओं यथा तंत्र और योग से सम्बद्ध हैं। सिद्धों का सम्बन्ध तन्त्र से है जिसके पुरस्कर्ता आदियोगी शिव हैं और नाथों की परम्परा भी आदियोगी शिव से ही चली हैं।

बौद्ध धर्म पर भारतीय वैदिक दर्शन की आगम पद्धति तंत्र और योग का प्रभाव रहा। लेकिन यह कह देना कि सिद्ध और नाथ, बौद्ध धर्म की किसी सहजमान या वज्रमान शाखा से जुड़े रहे हैं यह पूरी तरह भ्रामक है। "तन्त्र शास्त्र का आविर्भाव काल छठी से बारहवी शताब्दी मानकर अनेक विद्वानों ने इस शास्त्र के साथ न्याय नहीं किया हैं और इसीलिये वे अनेक विसंगतियों के शिकार हो गये हैं। 'आगम आणि तन्त्रशास्त्र' शीर्षक निबन्ध में इस विषय पर हमने विस्तार से विचार किया है। संहिता, ब्राह्मण उपनिषद् पाणिनि की अष्टाध्यायी, शिलालेख, रामायण, महाभारत ही नहीं, बौद्ध और जैन के पालि और प्राकृत वाङ्मय के उद्धरणों से भी पाँचरात्र और पाशुपत के नाम से प्रसिद्ध वैष्णव और शैव धर्म की स्थिति मान्य हो चुकी हैं। पाशुपत मत के आचार्य लकुशील एक ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। इनका स्थितिकाल ईसा की पहली–दूसरी शताब्दी माना गया है। पांचरात्र और पाशुपत मत का प्राचीन साहित्य आगम के नाम से प्रसिद्ध है और इन्हीं में तन्त्रशास्त्र का प्राचीन स्वरूप देखा जा सकता हैं।"[1]

गोरक्षनाथ की साधना पद्धति और उनके आध्यात्मिक चिंतन का केन्द्रीय तत्व योगमार्ग का रहा हैं। गोरखनाथ का यह योगमार्ग किसी भी पंथ की प्रतिक्रिया के रूप में नहीं था। प्रायः विद्वान मानते है कि गोरखनाथ का योगमार्ग सिद्धों के भोगवादी मार्ग के विपरीत धर्म क्षेत्र में एक प्रामाणिक आन्दोलन था जो आध्यात्मिक अनुशीलन से पहले इंद्रियों के दमन और मन पर अगाध संयम की बात करता है, जो कालान्तर में हठयोग के नाम से जाना गया। जबकि गोरखनाथ की चिंतन पद्धति सिद्धों के सहजयान से लेशमात्र भी प्रभावित नहीं है। वह भारतीय तन्त्र साधना का स्वतः स्फूर्त यौगिक पद्धति से संवलित शुद्ध साधना का मार्ग है। इस सन्दर्भ में डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पुस्तक कबीर में इस सत्य का उल्लेख किया हैः ''अब शंकराचार्य को वास्तविक ज्ञान हुआ और उन्होंने वज्रसूचिकोपनिषद् लिखी और 'सिद्धान्तविद्ध' नामक योगियों का एक ग्रन्थ भी लिखा। यहाँ यह भूल नहीं जाना चाहिए कि कापालिक वस्तुतः नाथपंथी है क्योंकि शाबरतन्त्र में जिन 12 आचार्यो को और उनके 12 शिष्यों को कापालिक कहा गया है वे वस्तुतः नाथपंथी ही थे।

बारह आचार्यों और बारह शिष्यों के इन नामों में कुछ भी ऐतिहासिकता संदिग्ध होने पर भी नागार्जुन, मीननाथ, गोरक्ष और चर्पट आदि सचमुच ऐतिहासिक हैं। म.म. हरप्रसाद शास्त्री ने जब बौद्ध सहजयान के सिद्धाचार्यों में प्रति विद्वान का ध्यान किया तो जाना गया कि बहुत से सिद्धगण और नाथपंथ के आचार्य एक ही हैं। आगे चलकर अब इस विषय की और भी चर्चा हुई तो जाना गया कि ये नाम सिर्फ सिद्धों और नाथों में ही समान नहीं हैं, बल्कि निरंजन–पंथियों तांत्रिकों और कापालिकों में भी समान रूप से प्रचलित हैं। इस सूची में निर्गुण मत के संतों का नाम भी जोड़ दिया जा सकता है। इस प्रकार इस विषय का अध्ययन केवल महत्वपूर्ण ही नहीं, काफी मनोरंजक भी सिद्ध हुआ हैं। दुर्भाग्यवश इस तरफ पंडितों को जितना ध्यान देना चाहिए, उतना अभी तक नहीं दिया गया है। सुप्रसिद्ध विद्वान म.म.पं. गोपीनाथ आदि नाथपंथियों, वज्रयानी और सहजयानी, बौद्धों, त्रिपुरा सम्प्रदाय के तांत्रिकों, नववैष्णव का नियमित और वैज्ञानिक अध्ययन ऐसी बहुत सी बातों का रहस्योद्घाटन करेगा जो इन सबमें समान रूप से विद्यमान हैं। महायान बौद्धधर्म और तंत्रमत का सम्बन्ध बहुत ही महत्वपूर्ण है और इस सम्बन्ध में सावधानीपूर्ण और गंभीर अध्ययन की जरूरत है।

नाथपंथ के आदि प्रर्वतक आदिनाथ अर्थात् स्वयं शिव माने जाते हैं। मत्स्येन्द्र इन्हीं के शिष्य माने जाते रहे हैं और इन्हीं मत्स्येन्द्रनाथ के कई शिष्य बड़े पंडित और सिद्ध हुए, जिनके प्रभाव से यह मत सारे भारतवर्ष में प्रतिष्ठित हो गया। इन शिष्यों में सबसे प्रधान गोरखनाथ या गोरक्ष थे। सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक तारानाथ (सिद्ध तारानाथ, जिनके शंकराचार्य व साक्षात्कार की किवंद्ती का ऊपर उल्लेख हो चुका है) का कथन है कि गोरखनाथ पहले बौद्ध थे बाद में शैव हो गये इसीलिए तिब्बत के लामा लोग गोरखनाथ को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखते हैं। गोरखनाथे ने ही योगमार्ग के अभिनव रूप हठयोग को प्रतिष्ठित कराया।"[2]

भगवान बुद्ध के चिंतन और मनन में दूर–दूर तक न तो कही वेद का प्रसंग है और न ही वेदोत्तर काल के किसी भी सिद्धान्त का व्यावहारिक प्रयोग है। बुद्ध की साधना में आगम और निगम, दोनों चिंतन को निरस्त कर दिया गया है। उनकी अपनी एक स्वतंत्र साधना पद्धति है जिसका वेद और तन्त्र से कोई सारोकार नहीं है; लेकिन कालान्तर में भगवान बुद्ध के निर्वाण के पश्चात् बौद्धों में वैचारिक संघर्ष हुआ और इसी वैचारिक संघर्ष के आधार

पर बौद्ध धर्म में सांप्रदायिक चिंतन का सूत्रपात हुआ। ईसा की 5वी और 6वी शताब्दी में बौद्ध संप्रदाय की महायान शाखा को यह लगने लगा कि भारतीय समाज और परिवेश में यदि दीर्घकाल तक जड़ें जमानी है तो तंत्र और योग का सहारा लेना पड़ेगा और उस समय के बौद्ध साधकों ने भारतीय तन्त्र साधना पर काम करना शुरू किया। "छठी शताब्दी के आस–पास बौद्ध धर्म में सहसा तान्त्रिक प्रवृत्तियों के प्रवेश की बात मानी जाती है और यह भी स्वीकार किया गया कि इससे इतनी शीघ्रता से बौद्ध धर्म का रूप परिवर्तित होता है कि उसके मूल रूप का कहीं पता नहीं चलता। इस तरह के लेखक तान्त्रिक शब्द का प्रयोग एक संकीर्ण अर्थ में करते हैं जिसमें कि पंचामृत, पंचमकार जैसी विधियाँ वर्णित हैं। इनका स्वरूप गुह्य समाज तंत्र और कौलज्ञान निर्णय में एक सा हैं। इसका क्या कारण है?[3]

बौद्ध साधकों ने भारतीय तन्त्र और योगशास्त्र पर बड़ी निष्ठा से कार्य किया और तन्त्र तथा योग की साधना पद्धति में जो भारतीय साधक थे उनसे अपना तालमेल बैठाना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि महायानी बौद्धों ने भारतीय तन्त्र साधना की बहुत से सूत्र और बहुत सी विचार पद्धतियाँ बौद्ध धर्म के प्रभाव से प्रभावित होती हुईं समाज को दिखलाई और जो भारतीय तान्त्रिक थे उनको भी बौद्ध में धर्म समाविष्ट कर लिया गया।

छठी शताब्दी से लेकर दसवीं शताब्दी तक बौद्ध धर्म की महायान शाखा के विभिन्न सम्प्रदाय, जैसे वज्रयान,सहजयान इनमें तंत्र और योग का घनघोर प्रयोग देखने को मिलता है। बौद्धों ने भारतीय तंत्र और योग साधना से अपना समावेश करके यह दिखलाने का प्रयास किया कि भारतीय दर्शन में तन्त्र की साधना प्रणाली बौद्धों का अवदान है। पाश्चात्य विचारक और इतिहासकार भी आज तक इसी भ्रामक तर्क से प्रभावित रहे हैं। यहाँ तक कि शंकराचार्य को भी उन्होंने बौद्ध धर्म से प्रभावित माना और उनके अद्वैतवाद को नागार्जुन के शून्यवाद के परवर्ती संस्करण के रूप में स्वीकार किया। भारतीय दर्शन में तन्त्र और योग की प्रणाली के पुरस्कर्ता आदियोगी शिव माने गये हैं जिनका वैदिक साहित्य में अत्यंत ही प्रामाणिक उल्लेख है। "शिव या रूद्र की उपासना वेदों के समय से प्रचलित है। यजुर्वेद का शतरुद्रीय अध्याय प्रसिद्ध है। तैत्तरीय आरण्यक में इस समस्त विश्व को रूद्र रूप बताया गया हैं। श्वेताश्वतर आदि कुछ उपनिषदों तथा महाभारत आदि पुराणों में शिव या रूद्र की महिमा वर्णित है। शैव सम्प्रदायों के मूल ग्रंथों को शैवागम कहते हैं। श्रीकंठ ने इन आगम को वेदों के समकक्ष माना है। माध्वाचार्य ने चार शैव मतों का वर्णन किया हैः लकुलीश, पाशुपत, शैव, प्रत्यभिज्ञा आदि रसेश्वर। यामुनाचार्य ने कापालिक और कालामुख नामक दो और शैव मतों का उल्लेख किया है। दक्षिण में शैवमत, वीरशैव या लिंगायत सम्प्रदाय और शैवसिद्धान्त सम्प्रदाय में विभक्त है।"[4]

यहाँ पुनः यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि सिद्धों और नाथों का सम्बन्ध बौद्ध धर्म और उसकी किसी भी शाखा से नहीं था। अपितु बौद्धों ने अपने ग्रन्थों में इस तथ्य को बिल्कुल विपरीत प्रस्तुत किया कि सिद्ध और नाथ, बौद्धों की साधना पद्धति और चिंतनधारा से प्रभावित सम्प्रदाय रहे हैं इसीलिए हम देखेंगे कि सिद्धों और नाथों की साम्प्रदायिकता कहीं–कहीं मिली–जुली सी दिखाई देती है, और दोनों के विचारक और साधक एक–दूसरे में व्यावर्तन करते हुए प्रतीत होते हैं। "सातवी–आठवीं शताब्दी से तान्त्रिक साहित्य में इस प्रकार की विचित्र भाषा का प्रचलन हो गया था। तन्त्र के साहित्य में ऐसे श्लोक मिलते हैं, जिनका ऊपरी अर्थ चिढ़ानेवाला और लोकमर्यादा विरोधी है, परन्तु पारिभाषिक अर्थों को समझने के बाद जो अर्थ स्पष्ट होता हैं, वह उतना चिढ़ानेवाला और धक्कामार नहीं होता। यह परम्परा नाथ योगियों की मध्यस्थता में हिन्दी के निर्गुणमार्गी कवियों की रचनाओं में भी पायी जाती है। बहुत से पण्डितों ने बताया कि इन उलटबांसियों और साधनात्मक रूपकों की परम्परा निर्गुणमार्गी संतों की सिद्ध कवियों के बौद्ध, सिद्धों से प्राप्त हुई है, परन्तु यह बात अधिक सत्य नहीं हैं। सन् ईस्वी की नवीं–दसवीं शताब्दी में मत्स्येन्द्रनाथ आदि गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) नामक सिद्ध हुए, जिनकी गणना 84 सिद्धों में भी होती है पर बाद में शिव के अवतार के रूप में प्रसिद्ध हुए। गोरक्षनाथ बहुत शक्तिशाली धार्मिक नेता थे। इन्होंने हठयोगप्रधान नाथ सम्प्रदाय का संगठन किया था। नाथपन्थी अनुश्रुतियों ने बताया गया कि अनेक शिव और योग संप्रदाय को तोड़कर बारहपंथी शाखा की स्थापना की थी। इस बारहपंथी योगमार्ग जालन्धर और कन्हपा जैसे बौद्ध कापालिक भी थे और वैष्णव,जैन और शाक्त साधक भी सम्मिलित थे। नाथ पन्थियों के भी 84 सिद्ध प्रसिद्ध हैं।"[5]

तन्त्र की इसी भूमिका में हम आगे जानेंगे कि नाथ सम्प्रदाय ने अपने को बौद्ध धर्म के प्रभाव से पूरी तरह से मुक्त कर लिया था और अपनी परम्परा को आदि योगी शिव से जोड़कर देखा। इन सबमें गोरखनाथ को इस बात का श्रेय जाता है कि उन्होंने अपनी साधना पद्धति को बौद्ध धर्म के किसी भी प्रभाव से प्रभावित नहीं माना और न ही अपनी गुरु परम्परा को बौद्धों के चिंतन से प्रभावित बताया है। गोरखनाथ ने अपने मार्ग को तंत्र साधना से और उसके समस्त क्रियाकलापों से पूरी तरह अलग कर लिया। सिद्ध होते हुए भी एक नवीन चिंतन पद्धति का विकास किया। भारतीय दर्शन में तंत्र और योग बहुत ही सम्माननीय साधना प्रणाली रही हैं। "तंत्रों के भी दो प्रकार है– वेदानुकूल तथा वेदबाह्य। वेदवाह्य तंत्रों के ऊपर बौद्ध प्रभाव, तिब्बत तथा भूटान की ओर माना जाता है, जिसका विशेष उग्र रूप वामाचार पूजा में दिखलाई पड़ता है। अधिकांश तंत्र वेदसम्मत हैं तथा उनकी प्रामाणिकता, साधना तथा साध्य की दृष्टि से अक्षुण्ण है।"[6]

"हिन्दी साहित्य का एक विशिष्ट सम्प्रदाय, तंत्रों की पूजा पद्धति तथा आचार–विचार के द्वारा विशेष रूप से प्रभावित तथा अनुग्रहीत है, उसका नाम है नाथ संप्रदाय। हठयोग–प्रदीपिका, सिद्ध–सिद्धान्त पद्धति, सिद्ध–सिद्धांत–संग्रह, गोरक्षपद्धति, गोरखवाणी आदि अनेक मान्य साम्प्रदायिक ग्रन्थ संस्कृत तथा हिन्दी में निबन्ध हैं।"[7]

नाथ सम्प्रदाय के आदि संस्थापक परम्परा के अनुकूल भगवान शिव हैं, जो सब नाथों के प्रथम आदिनाथ के नाम से विख्यात हैं। इससे स्पष्ट है कि नाथ सम्प्रदाय शैवमत की ही एक परवर्ती शाखा है। सिद्धमत, सिद्धमार्ग, योगमार्ग, योग सम्प्रदाय अवधूतमत, अवधूत सम्प्रदाय आदि विविध नामों से इस मत की पर्याप्त ख्याति उपलब्ध होती है। इस धर्म का मूल धर्म योगाभ्यास है इसीलिए योगमार्ग आदि नामों की सार्थकता है। इस मत के मान्य आचार्य, सिद्धों के नाम से विख्यात है और इसीलिए इसका सिद्धमत से प्रख्यात होना स्वाभाविक है।"[8]

fu"d"k

इस प्रकार गोरखनाथ ने अपने सम्प्रदाय को बौद्धों से पूरी तरह से अलग कर लिया और एक नये दर्शन हठयोग की प्रणाली का सूत्रपात किया। उन्होंने अपने दर्शन में जिस शब्दावली का प्रयोग किया वह शब्दावली भारतीय दर्शन की तन्त्र और योग प्रणाली से पूरी तरह से सामंजस्य रखती हैं। गोरखनाथ की प्रसिद्धि का आधार एक यह भी कि वे कबीर की तरह लकीर के फकीर नहीं रहे। उन्होंने अपनी एक नयी पद्धति और नयी परम्परा का विकास किया जिसका प्रभाव परवर्ती हिन्दी साहित्य की निर्गुण काव्यधारा पर देखा जा सकता हैं। गोरखनाथ ने अपने गुरु मत्स्येन्द्रनाथ के चिंतन को सीधे आदिगुरु भगवान शिव से जोड़कर बीच से बौद्धों के प्रभाव को खत्म कर दिया और अपने साहित्य में एक नवीन आध्यात्मिक चिंतन का सूत्रपात किया। वर्तमान में भी यह नाथ पंथ अपनी उसी प्रामाणिक बीज साधना पद्दति के रूप में भारत के विभिन्न राज्यों में विशेष कर गुजरात से मध्य भारत के बीच से होता आसाम तक देखने को मिल जायेगा। गोरखनाथ ने जिस साधना प्रणाली का सूत्रपात किया उस साधना प्रणाली में सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि न तो इस साधना पद्दति का कोई अलग सम्प्रदाय बना और न ही किसी अन्य धर्म की कोई बात ने इसमें प्रवेश किया है, यही गोरख के मत की विशेषता है।

lUnHkZ lwph

1. द्विवेदी ब्रजबल्लभ, *आगम और तन्त्रशास्त्र,* परिमल पब्लिकेशन दिल्ली, पृष्ठ सं. 60।
2. द्विवेदी हजारी प्रसाद, *कबीर,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ सं. 41।
3. द्विवेदी ब्रजवल्लभ, *आगम और तंत्रशास्त्र,* परिमल पब्लिकेशन दिल्ली, पृष्ठ सं. 63।
4. शर्मा चन्द्रधर,भारतीय दर्शन : आलोचना और अनुशीलन, मो० ब० प० प्रा० लि० दिल्ली, पृष्ठ सं. 335।
5. द्विवेदी हजारी प्रसाद, *हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 30।
6. पांडेय राजबली, हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, पृष्ठ सं. 372।
7. वही।
8. वही।

––==00==––